हमारे अगुवों की ओर से संदेश

वचन के द्वारा परिवर्तन

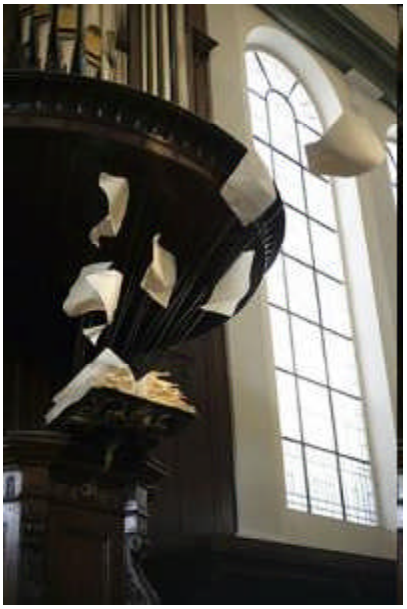

''उड़ान'' लिन्न लिगते द्वारा वेरेनिगेड डोप्सगेज़िंदे जेमिन्टे एमस्टरडम – सिंगेलकेर्क (मेनोनाइट चर्च) इन नीदरलैण्ड में एक कलाकृति की स्थापना। फोटो: हेंक स्टेनवर्स

विज्ञप्ति जारी करने की तारीख: मंगलवार, 21 मार्च 2017

हृदय के चार कक्षों की तरह एमडब्लयूसी के चार कमीशन चार क्षेत्रों में बंट कर ऐनाबैपटिस्ट सम्बन्धित कलीसियाओं के विश्वव्यापी समुदाय की सेवा करते है: डीकन कमीशन, फेथ एण्ड लाइफ कमीशन, शान्ति कमीशन, मिशन कमीशन। इन कमीशनों के द्वारा जनरल कॉंउन्सिल में विचार करने हेतु विषय तैयार किए जाते हैं, सदस्य कलीसियाओं को मार्गदर्शन दिया जाता है व संसाधन प्रस्तावित किए जाते हैं, तथा समान हितों व समान लक्ष्यों वाले विषयों पर साथ मिलकर कार्य करने के लिए एमडबल्यूसी सम्बन्धित नेटवर्कों या सहभागिताओं को बढ़ावा दिया जाता है। इस लेख में, ऐसे ही एक कमीशन द्वारा उनकी सेवकाई के लक्ष्य के दृष्टिकोण से एक सन्देश हमारे साथ बाँटा गया है।

रिनेवल 2027 दस वर्षीय कार्यक्रमों की एक श्रृंखला है जिसे मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस (एमडबल्यूसी) द्वारा ऐनाबैपटिस्ट आंदोलन के आरम्भ की 500वीं वर्षगाँठ मनाने के उद्देश्य से आयोजित किया गया है।

''वचन के द्वारा परिवर्तन: ऐनाबैपटिस्ट दृष्टिकोण से पवित्रशास्त्र का पठन'' (12 फरवरी 2017 को आग्सबर्ग जर्मनी में उद्घाटन समारोह) एमडबल्यूसी के फेथ एण्ड लाइफ कमीशन की नीतियों के साथ एकदम उपयुक्त बैठता है जो सदस्य कलीसियाओं को ''ऐनाबैपटिस्ट विश्वास व व्यवहार को समझने और उसका वर्णन करने'' में सहायता करती हैं।

धर्मसुधार को स्मरण करने के अनेक उत्सवों के बीच में, विशेष कर यूरोप में, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि ऐनाबैपटिस्ट आन्दोलन का उदय भी धर्मसुधार की पृष्ठभूमि में ही हुआ था और इसे मसीही विश्वास और जीवन के लिए अधिकार के रूप में बाइबल को पुन:पहचानने के द्वारा निर्णायक रूप प्राप्त हुआ था।

जनवरी 1525 में, प्रथम वयस्क बपतिस्मा के कुछ ही समय पहले, एक बाइबल अध्ययन समूह जिसने उस समय उदय हो रहे ऐनाबैपटिस्ट आंदोलन के बीजकोष का रूप लिया, ने इस बात को बिल्कुल स्पष्ट कर दिया था:

''किन्तु, बाइबल को ले कर और सारे सम्भावित बिन्दुओं का अध्ययन करने के बाद, हमने बेहतर जानकारियाँ प्राप्त की हैं।''

पत्र में इस बात का वर्णन किया गया है कि किस प्रकार से उन्होंने पवित्रशास्त्र की एक गहरी समझ प्राप्त की।

पाँच केन्द्रिय मूलविषयों ने – जो ऊपर दिए गए उद्धरण में देखे जा सकते हैं – धर्मसुधारवादियों के साथ साथ चलने से हट कर विरोध का एक रूख अपनाकर एक विशिष्ठ पहचान बनाने के कारण को स्पष्ट किया है:

- धर्मसुधार के द्वारा लाए गए नवीनीकरण (रिनेवल) को आरम्भ करने के लिए **पवित्रशास्त्र** ही मुख्य बिन्दु है।
- दूसरों से सीखना ही नहीं, परन्तु **स्वयं पवित्रशास्त्र को पढ़ कर** सीखना अत्यंत अनिवार्य है।
- बाइबल अध्ययन समूह ने एक **आशान्वित रूख** (बाइबल अध्ययन के परिणाम के रूप में कुछ अच्छा प्राप्त करने की आशा) अपना कर बाइबल का पठन किया। उन्होंने ''सारे सम्भावित बिन्दुओं का अध्ययन'' किया, बाइबल पाठ में प्रश्न ढूंढ़े और उनका उत्तर प्राप्त किया।
- उन्होंने **समझ की इन नई बातों के आसपास स्वयं को पुनः उन्मुख किया**। इस तरीके से, उन्होंने न सिर्फ कैथोलिक कलीसिया की शिक्षाओं, बल्कि ज़्विंगलि और अन्य धर्मसुधारकों की शिक्षाओं के विषय में ''बेहतर जानकारियाँ प्राप्त की।''

''बेहतर जानकारियाँ प्राप्त'' करना। सरसरी तौर पर पढ़ने पर यह एक बहुत ही सकारात्मक कथन प्रतीत होता है। परन्तु इसमें एक पीड़ा की भावना भी पाई जाती है। यह इस बात की ओर संकेत करता है कि किसी को वास्तव में गलत समझा गया है; इसमें पुरानी बातों, पुरानी पसन्दों, और पुरानी समझ को छोड़ कर आगे बढ़ने की एक इच्छुकता दिखाई देती है। अक्सर यह आसान नहीं होता।

यहाँ पर जो मुख्य प्रश्न दाँव पर लगा है वह यह है: क्या हम बाइबल के वचन को (और परमेश्वर को जो हमसे बात करना चाहता है) अनुमति देते हैं कि वह हमारी धारणाओं को जाँचें ताकि हम स्वयं को ''बेहतर जानकारियाँ प्राप्त'' करने दें? या ''सब बातों को परखो: और जो अच्छी है उसे पकड़े रहो''(1 थिस्सलुनीकियों 5:21) की चितौनी सिर्फ दूसरों पर लागू करने के लिए है?

इस बिन्दु तक, सारे विषय प्रोटेस्टेंट सिद्धान्त माने जा सकते हैं। परन्तु पाँचवाँ बिन्दु सबसे विशिष्ट ऐनाबैपटिस्ट सिद्धान्त है:

- उद्धरण में ''हमने'' शब्द अत्यंत महत्वपूर्ण व निर्णायक है: समुदाय में न सिर्फ बाइबल अध्ययन होता है; परन्तु **पवित्रशास्त्र के विषय में नई समझ भी सामूहिक रूप से प्राप्त होती हैं।**

किसी को भी ऐनाबैपटिस्ट मण्डली का हिस्सा बनने के लिए बाध्य नहीं किया जाता – विश्वास और सदस्यता सदा व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर है। किसी भी अकेले व्यक्ति के पास सारी समझ या सारे वरदान नहीं हो सकते; परन्तु हर एक व्यक्ति के पास कुछ न कुछ होता है। इसलिए, हमें बाइबल अध्ययन के लिए एक ऐसा प्रारुप तैयार करना अत्यंत अनिवार्य है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति बाइबल के पाठ को बेहतर समझने के लिए अपनी अपनी ओर से योगदान दे सके: युवा और बुजुर्ग, स्त्री और पुरुष, विद्वान और मजदूर। ठीक इसी कारण से हमारे पाठ में ''हमने'' इतना महत्वपूर्ण है!

परन्तु इसी उद्धरण में बहुत से खतरे भी स्पष्ट दिखाई देते हैं।

स्वयं को ''बेहतर जानकारियाँ'' प्राप्त करने देना अच्छा सुनाई पड़ता है, परन्तु किसी एक ही समझ की उत्तमता को सिद्ध करने के अन्तहीन प्रयासों या ऐनाबैपटिस्ट इतिहास में बार बार देखे जाने वाले कलीसियाई कलंकित विभाजनों से हमें कौन बचा सकता है? हम इस बात को कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि हमें यह स्वीकार करना आवश्यक है कि हमारा सारा ज्ञान आंशिक है और हमें अधिक से अधिक समझ की आवश्यकता है? और हम इस बात को कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि ''एकता के लिए संघर्ष'' की कीमत चुका कर ''सत्य के लिए संघर्ष'' को प्राप्त नहीं किया जा सकता?

यदि ''विश्वास और जीवन का नवीनीकरण'' तथा ''वचन के द्वारा परिवर्तन'' मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के सन्दर्भ में लाना है, तो यह अनिवार्य होगा कि उत्तर और दक्षिण, पूरब तथा पश्चिम के सदस्य एक दूसरे के साथ ''हम'' हो कर चलें।

हेंसपेक्टर जेकर एमडबल्यूसी के फेथ एण्ड लाइफ कमीशन के एक सदस्य हैं और स्वीट्जरलैण्ड के थियोलॉजिकल सेमनरी बेयनबर्ग में ऐतिहासिक धर्मविज्ञान व नीतिशास्त्र के प्राध्यापक हैं।